पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

गरति

डॉ. रीतामणि वैश्य

आज गरति की नींद कुछ जल्दी खुली। सड़क किनारे घर होने के कारण अक्सर सुबह गाड़ियों में बजने वाले गानों से ही उसकी नींद खुलती है। वह इन बाजारू गीतों को अनसुना कर तकिये को कानों में ज़ोर से दबाती हुई फिर से सोने की कोशिश करती है। पर आज'...अतिकै सेनहर मुगारे महुरा/तातोकै सेनेहर माको/तातोकै सेनेहर बहागर बिहुटि/नापाति केनेकै थाको[1] - गीत के बोल से उसकी नींद टूटी, गीत की धुन से उसका तन-मन रोमांचित हो उठा और मन गीत में डूबता चला गया।

ढोल के ताल के साथ-साथ गरति का दिल हिचकोले खाने लगता है। उसे अहसास हुआ कि रङालीबिहु करीब है। जब से शहर आयी, वह काम में ही व्यस्त रही। कैसे तीन महीने बीत गए पता ही नहीं चला। उसे दिन, वार, महीने का हिसाब ही नहीं रहा। स्कूल छुट जाने के बाद उसे इन चीजों की जरूरत भी नहीं पड़ी। यहाँ की दिनचर्या रोज एक जैसी तो है पर गाँव से बिल्कुल अलग है। सुबह उठना, साहब-मेम साहब को गरम पानी पिलाना, फिर फीकी चाय और बिस्कुट, दोपहर में भात, दाल और सब्जी। साहब को खाने में हमेशा साग की सब्जी चाहिए। बाड़ी (किचन गार्डेन) के पीछे से ताजा साग चुनकर सब्जी बनाने में समय लगता है। गरति रात-दिन काम करती है, पर बहुत खुश रहती है। साहब जब भी बाजार जाते हैं, उसे साथ चलने को कहते हैं। गुवाहाटी शहर की चकाचौंध उसे भा गयी थी। मेम साहब ने एकबार उसे कहा था- 'तू बहुत खुशनसीब है कि इस शहर में रह रही है।' गरति ने सर हिलाते हुए हामी भरी।

सुबह का काम निपटाने के बाद गरति दोपहर के काम में लग जाती है। घर की साफ-सफाई,कपड़ा धोना, कालु का देखभाल करना –इन सबके बीच उसे समय का हिसाब कैसे रह सकता है। मालकिन ने पहले ही दिन उसे घर की ज़िम्मेदारी सौंपते हुए कहा था- 'देख, इस घर को अपना ही समझना। जो खाना है खाओ, पर काम अच्छी तरह से करना।'

'जी मेम साहब।' उसने धीमी आवाज में कहा।

'और सुन कालु का देखभाल अच्छी तरह से करना होगा। याद रखना, अगर उसे तकलीफ पहुंची, तो तेरी नौकरी गयी ।'

गरति किसी तरह की शिकायत का मौका उन्हें नहीं देना चाहती। मालिक और मालकिन ने उसे भर पेट खाना दिया है। घर में थोड़ा-बहुत पैसा भेजते हैं। हालांकि उसके माँ-बाप ने कभी उसे काम के लिए नहीं कहा था। उसके चाचा के कहने पर वह यहाँ आयी थी। चाचा ने कहा था-'पढ़ने-लिखने पर भी आजकल नौकरी नहीं मिलती। हम गरीब हैं,हमारे नसीब में काम ही लिखा है। वे बड़े लोग हैं। तू वहाँ काम करेगी तो तू भी खा-पी लेगी और तेरे भाई-बहनों के पेट भी भरेंगे। ऐसा मौका बार-बार नहीं आता।' चाचा ने ठीक ही कहा था। उसके बाकी साथियों को पढ़-लिख लेने के बाद अच्छी जिंदगी ही तो मिलेगी। पर वह अभी से मजे में है।

इन दिनों वह कोयल की कुहू-कुहू आवाज सुन रही थी। पेड़ पौधों के नए पत्ते उसकी नजर में आ रहे थे। पर यह वैशाख महीने के आगमन की सूचना थी,वह उसका संयोग नहीं कर पायी थी। आज ढ़ोल की आवाज के साथ बिहुगीत ने उसे चंचल बना दिया। हाँ,यह वैशाख का महीना है, बहाग बिहु में नाच-गाकर पागल होने का यह मौसम है। अचानक उसे अपने गाँव की याद आने लगी।

गाँव में बच्चों को ढ़ोल नहीं मिलता था। बिपिन महाजन की दुकान के तेल के डब्बे को पीट-पीटकर वे घर-घर जाकर बिहु नाचते थे। लोगों से मिले पैसों को इकट्ठा कर वे नदी के तट पर पीपल के नीचे खाना खाते थे। उसकी आँखें भर आती हैं। गरीबी भी कैसी चीज होती है। संतान को माँ-बाप,गाँव-घर से छीन ले जाती है। वह दीवार में टंगे कलेंडर को देखती है। आज अप्रैल महीने की ग्यारह तारीख है। कल माँ उससे मिलने आयेगी। उसके मन में खुशी की लहर उठती है।

गरति हासदा। चौदह-पंद्रह साल की दुबली-पतली साँवली रंग की लड़की है। भारत-भूटान की सरहद पर घर है। घर क्या है पाँच-छह फुट की ऊंचाई की मिट्टी के दीवार से बनी झोपड़ी है। मुख्य सड़क से पाँच-छः किलोमीटर अंदर जंगल को चीरते हुए दो नदियाँ पार होने पर मिलता है उसका लेबरा शांतिपुर गाँव। सड़क से उन्हें या तो पैदल जाना होता है, नहीं तो अपनी साइकिल ही एकमात्र साधन होती है। लेबरा शांतिपुर गरीब ईसाई लोगों की बस्ती है। पास के गाँव में हिन्दू और मुसलमान एक साथ रहते हैं। इस इलाके के लोग बिहु,पूजा,क्रिसमस,ईद सबमें बराबर भाग लेते हैं। इसी पड़ोसी गाँव में एक सरकारी स्कूल है,जहां

आस-पास के सारे गावों के बच्चे पढ़ते हैं। सारे बच्चे कहाँ पढ़ते हैं..... जिन्हें पढ़ना होता है ,इसी स्कूल में पढ़ते हैं। गाँव में काम बहुत कम मिलता है। पर जो भी मिलता था,लोग करते थे। गरति भी कड़ी धूप में खेत का काम किया करती थी। इसीलिए वह यहाँ का काम आसानी से कर पाती है।

आज चौधुरी के घर में बिहु की तैयारी होगी। चौधुरी और चौधुराइन ने छुट्टी ली है। उन्हें खान-पान का बंदोबस्त करना है,सगे-संबंधियों के लिए बिहुवान[2] खरीदने तुरन्त जाना है। गरति सुबह का नाश्ता परोस रही थी कि इतने में बाहर 'गरति...गरति' की पुकार सुनायी पड़ती है। वह उछलकर बाहर आती है। कालु गरति के पीछे-पीछे आकर अनजान लोगों पर भौंकता है। गरति के एक इशारे से वह चुप हो जाता है। गरति की माँ दोनों छोटी बच्चियों को साथ लेकर आयी है। वह माँ के सीने से लिपट जाती है,फिर दोनों बहनों को जी भरकर चूमती है। वह इतनी खुश थी कि माँ के साथ खड़ी उसकी सहेली मारथा को उसने देखा ही नहीं। उसका चेहरा खिल गया। मारथा उसके गाँव की लड़की है। दोनों एक साथ पढ़ती थीं। मौका पाकर वह भी सहेली से मिलने चली आयी। माँ ने एक पोटली गरति के सामने रख दी। गरति ने उसे खोलकर देखा कि लड्डू और पिठा[3] से पोटली भरी है। असम के लोग कितने ही गरीब क्यों न हो,बिहु के समय किसी न किसी तरह से लड्डू और पिठा का बंदोबस्त कर लेते हैं। खुशी के मारे पोटली को उठाये गरति मालकिन को दिखाने दौड़ी। उसके पीछे-पीछे दोनों बहनें और आगे कालु है। चौधुराइन तेजी से बाहर आयी और उन्होंने झट से कालु को अंदर कर लिया। दरवाजा अंदर से बंद कर दिया गया। गरति पर मानो बिजली गिर पड़ी। उसे समझ नहीं आ रहा था। काफी देर तक वे सब आंगन पर बैठे रहे। वातावरण स्थिर सा हो गया। घर के अंदर चौधुरी का संसार था और बाहर गरति की पूरी दुनिया थी। धूप सर चढ़ चुकी थी। भूख के मारे वे कुलबुला रहे थे। पोटली में से कुछ निकालकर वे खाने लगे। इतने में चौधुरी बरामदा आते हैं और पाँच सौ रुपये का एक नोट उनकी तरफ फेंकते हुए कहते हैं-' यह ले जा ।'

बात बिल्कुल साफ हो चुकी थी। गरति के घरवालों के लिए चौधुरी के घर में तो दूर आंगन में भी जगह नहीं थी। जब वे जाने लगे तो मारथा ने कहा- 'अपना घर स्वर्ग होता है गरति। एक पढ़ाई ही हम गरीबों की संपत्ति होती है। तू पक्का घर में रहती है,रात-दिन मशीन की तरह काम करती है। पर तेरी हैसियत कालु से भी कम है। हम अपने घर के मालिक हैं। मैं भूखी मर जाऊँगी,पर पढ़ाई नहीं छोड़ूंगी। एक दिन हमारे भी दिन फिरेंगे। मैं तुझे खुश देखने आयी थी। पर दुखी होकर जा रही हूँ।'

वे लोग चले गये। शाम का घना अंधेरा चारों ओर से घिर आया था। अंधेरे की गहराई में गरति डूब चुकी थी। माँ नन्हीं बच्चियों के साथ कैसे इतनी दूर जायेगी! अब गाड़ी कहाँ मिलेगी ! भारत और भूटान की सीमा के दरंगा मेले में उतरकर उन्हें काफी दूर तक पैदल जाना होगा। फिर दो-दो नदियां ! नदी में मांझी होगा कि नहीं। वैशाख की बरसात में नदी में पानी का उफान उठता है। पिछले साल की तरह नदी पार होते समय गरति का एक भाई पानी में बह गया था। वह सिहर उठी।उसे तरह-तरह की चिंता सताने लगी। ऊपर से मारथा की बातें तीर की तरह उसके दिल में चुभती रहीं। दूसरों के घर में रहकर पेट भरकर खाना जिंदगी का मकसद नहीं हो सकता। उसे एहसास हुआ कि वह एक बदतर जिंदगी जी रही है। उसकी जिंदगी ऐसी ही रहेगी -दूसरों का काम करना और जूठन खाना। मारथा पढ़-लिखकर एक दिन बड़ी नौकरी करेगी और गरति जैसी किसी को नौकरानी रखेगी। उसके मुँह से एक शब्द निकल आया - 'नौकरानी'। वह सोचती है ...सही है, है तो वह नौकरानी ही। समाज में कभी उसे पूछा नहीं जायेगा। इज्जत उसी की होती है,जो लिखाई-पढ़ाई करते हैं। उसे पास के गाँव के हमीद चाचा याद आते हैं। गरीब है,पर शिक्षित हैं। गाँव में हुए किसी भी मसले पर उनकी राय ली जाती है। गरति के मन में यह बात घर कर गयी कि एक दिन मारथा भी हमीद चाचा की तरह हो जायेगी और वह दूसरों के घर में साफ- सफाई करनेवाली बाई बनकर रह जायेगी।

रात को उसे नींद नहीं आयी। बड़ा अच्छा काम मिला है- यही सोचकर उसने गाँव छोड़ा था। अब वह करेगी क्या... उसका दिमाग चकराने लगा। मुर्गे के बाग से वह झटपट बिस्तर से उठ आती है। आज के दिन लोग गाय-बैलों की दीर्घायु की कामना करते हुए उन्हें नदी या पोखर में नहलाते हैं। चौधुरी के घर में गाय-बैल नहीं हैं ; इसीलिए कालु को ही नहलाने की व्यवस्था कर रहे हैं। इतने में कपड़ों की गठरी हाथ में लेकर गरति आंगन पहुँचती है। तेजी से बाहर की तरफ निकलती हुई गरति को देखकर चौधुरी ने टोका-

'ए,इतनी सुबह कहाँ निकली है?' गरति के कदम रुक गए।

'मैं गाँव जा रही हूँ।'

चौधुरी को समझ आया कि कल की घटना को लेकर वह दुखी है। उसे समझाते हुए चौधुरी ने मीठे स्वर में कहा-'धत् पगली। ऐसे बिहु के दिन कोई ऐसे जाता है क्या ? चल, अंदर चल।'

चौधुरी को गरति के घर की फटेहाली मालूम है। उन्होंने सोचा कि कुछ अच्छी तरह खा-पी लेने से उसका गुस्सा उतर जाएगा और वह सब कुछ भूल जाएगी। गरति को वहीं खड़े देख चौधुरी की आवाज कुछ तीखी हुई-

'ऐसा क्या है तेरे गाँव में? यहाँ.....'

'वहाँ मेरा घर है।' चौधुरी की बात पूरी होने से पहले उसने जवाब दिया।

'क्या करेगी घर जाकर?'

'पढ़ाई करूंगी।'

'अच्छा, तू पढ़ाई करेगी?' हल्की सी मुस्कुराहट के साथ चौधुरी ने व्यंग्य कसा। उन्होंने फिर कहा-'चल ठीक है। तू पढ़ाई करेगी। पर तू अकेली कैसे जायेगी?'

'जैसे कल माँ गयी थी!'

चौधुरी की भौंहें तन गयीं। उन्होंने अपनी जिंदगी में कभी किसी से ऐसा जवाब नहीं पाया था। गरति की तरफ वे खूंख्वार नजरों से देखने लगे। मानो वे अभी उसे खा जायेंगे। चौधुरी की आँखों में आँखें डालती हुयी गरति बोली-'मैं तो जाऊँगी ही। 'इस गँवार नौकरानी से उन्हें इस तरह के जवाब की उम्मीद न थी। वे भौचक्का खा गये। वे चौधुराइन की ओर देखने लगे। तब तक गरति आंगन से निकल चुकी थी। उसने चौधुरी के गेट को बाहर से बंद कर दिया। गेट के पोस्ट पर चिपकाये नेमप्लेट पर उसकी नजर पड़ी। उसमें लिखा था 'अंजन चौधुरी ,इंजीनियर ,असम सरकार'। यह नेमप्लेट उसने पहले भी कई बार देखा था। आज उसकी नजर चौधुरी के नाम पर टिकी रही।गरति ने देखा कि नेमप्लेट से चौधुरी का नाम धीरी-धीरे गायब हो रहा है। उस पर उसने अपना लिखा लिखा पाया -'गरति हासदा,इंजीनियर,असम सरकार'। पौ फट चुका था। सूरज की किरणें उसके चेहरे पर बिखर गयीं। वह तेजी से चल पड़ी ।

टिप्पणी:

1. यह एक बिहुगीत है;जिसका अर्थ है-सबसे प्यारा मूंगे का अटेरन उससे भी प्यारी घिरनी, उससे भी प्यारा वैशाख का बिहु न मनाकर कैसे रहूँ।
2. बिहुवान-वैशाख बिहु में एक दूसरे को उपहार स्वरूप दिये जानेवाले कपड़े
3. पिठा-चावल के चूर्ण से बना एक प्रकार का स्थानीय लघु आहार। पिठा विविध प्रकार के होते हैं।

संपर्क-सूत्र:
हिंदी विभाग
सहायक अध्यापक
हिन्दी विभाग,गौहाटी विश्वविद्यालय